P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजकुमार निजात की गज़लों में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के विविध आयाम

सुखप्रीत कौर
शोधार्थी,
हिंदी विभाग,
गुरूकाशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो, बठिंडा

कविता चौधरी
सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
गुरूकाशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो, बठिंडा

सारांश

राजकुमार निजात आत्मा राजकुमार परमात्मा चेतना के जागरण को सबसे बड़ा गुण मानते हैं। इस संसार से प्रेम करना परमात्मा से प्रेम करना है। अपने दुःखो को बढ़ाना काफिरपन है। आत्मिक आध्यात्मिक जागरण में मनुष्य स्वयं परमात्मा ही हो जाता है। मनुष्य की इसी आत्म से परमात्म स्थिति को उपनिषदों में अहं ब्रह्मास्मि कहा है। राजकुमार निजात के गजल संग्रह 'तपी हुई जमीन' में गजलों के माध्यम से दिखाया है कि हर मनुष्य अपने अहं और स्वार्थ के लिए जिंदगी जी रहा है और इंसानीयत को भूलता जा रहा है। समाज को आतंकवाद त्रासद कर रहा है वह भय में जीवन व्यतीत कर रहे है, साथ ही राजकुमार ने अपनी गजलो में दिखाया है कि अठारवी शताब्दी में यूरोप में ओद्योगिक क्रांति को बढ़ावा मिला है जिससे मानव का बौद्विक विकास में विस्फोट का काम किया। स्वपन व कल्पना की दुनिया से हटकर मनुष्य ने कठोर धरती पर पैर रखा। निजात ने फैली विसंगतियों का चित्रण अक्राशिमय भावों के साथ किया है।

मुख्य शब्द : राजकुमार निजात, गजल, मनोविज्ञान।

प्रस्तावना

मनोविज्ञान का क्षेत्र लगातार विकसित होता जा रहा है। राजनीतिक मनोविज्ञान में राजनीतिक नेताओं एवं अधिकारियों तथा सामान्य व्यक्तियों के व्यवहारों के बीच संबंधों का अध्ययन किया जाता है। निजात की गजलों में नेताओं केव्यवहारों से त्रासद जनता को दिखाया गया है। राजकुमार निजात भी देह एवं भौतिक जगत् के परे और भीतर आत्मा, परम आत्मा–चेतना के 'जागरण' को ही सबसे बड़ा गुण मानते हैं। इस आत्मा–परमात्मा के प्रति जागरण, परमात्मा की रचना में इस चेतना संसार के प्रति स्नेह–भाव से भरना है। यही सर्वोच्च निजातीयता है। निजातीयता और परमात्मा चेतना के भाव में कोई अन्तर नहीं है। यह जागरण मनुष्य को परमात्मा से संबद्ध कर देता है। योग इसे ही कहा जाता है। आत्मचेतना का परमात्म चेतना से मिलना। इस मिलन का रास्ता परमात्मा की इस रचना– संसार के भीतर से ही होकर जाता है। इस जगती को प्रेम करना ही परमात्म–प्रेम है। इस जगती की पीड़ाओं से, वेदनाओं से भरा– अपने कृत्यों से, वचनों से धरती के जीवन में दुःखों–कष्टों को बढ़ाना ही काफिरपन है, बे–पीर होना है। यह मनुष्य की अधमता–पशुता की स्थिति है। अन्यथा इस आत्मिक–आध्यात्मिक जागरण में मनुष्य स्वयं परमात्मा ही हो जाता है। मनुष्य की इसी आत्म से परमात्म स्थिति को उपनिषदों में 'अहं ब्रह्मास्मि' मैं ब्रह्म हूँ– कहा है। यही वह स्तर है, जहाँ पहुँचकर प्रतीति होती है कि मैं ही सबमें हूँ और सब मुझमें हैं। तीनों लोकों में मेरा ही विस्तार है। यह धरती–आकाश, सूर्य–चन्द्र, पशु–पेड़–पक्षी सब कहीं मेरा ही रूप है। हिन्दी में ग़ज़ल लेखन की परम्परा कोई नई नहीं है। इसका आरंभ भारतेन्दु युग से हुआ और इसके बाद प्रसाद, निराला, शमशेर, त्रिलोचन, दुष्यन्त कुमार आदि कवियों ने इस परम्परा में अनेक कड़ियों को जोड़ा। ग़ज़ल मूलतः फारसी काव्य का एक लोकप्रिय रूप है। फारसी से ग़ज़ल उर्दू में आई और उर्दू शायरी पर इसका असर सिर चढ़कर बोला। उर्दू ग़ज़ल का पहला शायर चन्द्रभान 'ब्राह्मण' को माना जाता है। मीर, ददृ, गालिब, जौक, नासिख, दाग, फानी, हसरत, फिराक, फैज़ और जज्बी उर्दू ग़ज़ल के पोषक एवं संस्कारक शायर हैं। इन्होंने ग़ज़ल को केवल प्रेमालाप से आगे बढ़ाकर जीवन के विभन्न पक्षों, पहलुओं और आयामों से न केवल परिचित कराया अपितु उनकी अभिव्यक्ति के लिए सक्षम भी बनाया। इनमें से किसी ने ग़ज़ल की भाषा–शैली को सजा–संवारकर सहज और टकसाली रूप प्रदान किया तो किसी ने उसे भाव–वैभव प्रदान किया।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध कार्य का उद्देश्य मनोविज्ञान के विविध आयामों को निजात के गज़ल संग्रह में उजागर करना है। मनुष्य के अहं को मिटाकर बौद्धिक विकास करना है।

'ग़ज़ल' शब्द फारसी के 'ग़ज़ाला' से बना है। ग़ज़ाला का अर्थ है हिरन, हिरन के छोटे शिशु को ग़ज़ाला कहा जाता है। हिरन की चीख ही ग़ज़ल में मार्मिकता भर जाती है। मर्मस्पर्शिता इसका प्राण होता है। ग़ज़ाला का एक अर्थ महबूबा के साथ बातचीत करना भी लिया जाता है। औरतों से बातचीत करना भी ग़ज़ाला कहलाता है। वास्तव में इसका उदय 'कसीदा' से पूर्व पढ़े जाने वाले 'तश्बीब' से ही हुआ है। 'कसीदा' प्रणय–गीत है इसके पहले दो–चार पंक्तियों का प्रेमगीत 'तश्बीब' कहलाता था। बाद में यह अलग काव्य रूप बन गया। उस समय जिसे 'तश्बीब' कहा जाता था अब उसे ही 'ग़ज़ल' कहा जाता है।[1]

ग़ज़ल के इसी संकल के शायर राजकुमार निजात ने समाज, राजनीति, शिक्षा, खेल, अर्थ, संसार के भीतर फैली अनेक विसंगतियों का चित्रण जिन आक्रोशमय भावों के साथ किया है, इस आधार पर इनकी अपनी नई पहचान उभरकर सामने आई है।

सन् 1991 में प्रकाशित 'तपी हुई जमीन' राजकुमार निजात का एकमात्र ग़ज़ल संग्रह है। इसमें 68 ग़ज़लें संकलित की गई हैं। इसमें कवि ने मुख्य शीर्षक के अनुरूप समसामयिक भयावह वातावरण से जन्मी ग़ज़लों को प्रमुखता प्रदान की है। प्रथम ग़ज़ल में ही कवि ने तत्कालीन हालात को अभिव्यक्ति प्रदान की। कवि ने लिखा है –

जाने कहाँ ले जाएंगे इस दौर के हालात
पहले कभी ये कारवां इतना डरा न था।[2]

इस तरह कवि ने अपनी इन ग़ज़लों में आतंकवाद से त्रास जनता का सजीव अंकन भी किया है। आतंक के कारण आम जनता का जीवन वीरान हो चुका है। ''एक सन्नाटा पड़ा इस छोर से छोर तक किसने है आखिर छिपाया इस शहर का आदमी।[3]

कवि ने महानगरीय सभ्यता तथा राजनीतिज्ञों पर भी कटाक्ष किया है कि कैसे आज का मानव अजनबी बन चुका है और हमारे राजनेता तो आए दिन झूठे वायदे करते हैं। अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिए हड़ताल करवाते हैं।

जब अपनी–ही पोल खुली तो हड़ताले करवाते हैं
उठा सत्य से पर्दा तो उनका अनशन है रामकसम।[4]

आरम्भिक अवस्था में ग़ज़ल सिर्फ इश्क, महफिलों और दरबारों तक ही शान थी। लेकिन जैसे ही आधुनिक युग के ग़ज़लकारों ने ग़ज़ल के विषय क्षेत्र का विकास किया वह आम जनता के सिर चढ़ कर बोलने लगी। अब आधुनिक युग में ग़ज़ल का सम्बन्ध राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, मानवतावादी, सांस्कृतिक क्षेत्रों तक फैल गया। राजकुमार जी की ग़ज़लों का विषय क्षेत्र इनसे अछूता नहीं। यहीं इनकी ग़ज़लों का मूल वैशिष्टय है।

यथार्थ वह सब है तो इस विश्व में स्वाभाविक रूप से घटित होता रहता है। जहाँ बुद्धि का अनुशासन नहीं है। यथार्थवाद का शाब्दिक अर्थ है – जो वस्तु जैसी हो, उसे उसी अर्थ में ग्रहण करना। यथार्थवादी साहित्य में जीवन जैसा है वैसा ही चित्रित करके अतिश्योक्ति और विरोधाभास के तत्त्व को बहिष्कृत कर दिया गया। साहित्य की इस नवीन धारा की सफलता का श्रेय अठारहवीं शताब्दी में यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति को दिया जाता है जिसने मानव के बौद्धिक विकास में विस्फोटक का काम किया। स्वप्न व कल्पना की दुनिया से हटकर मनुष्य ने यथार्थ की कठोर धरती पर पैर रखा।

कवि जो रचना करता है वह अपनी कल्पना, मनचिन्तन, हृदय–पीड़ा अनुभूति एवं संवेदनाओं को ही अभिव्यक्ति रूप प्रदान करता है। राजकुमार निजात ने आधुनिक युग के यथार्थ का चित्रण अपने काव्य में किया है। अपने आरम्भिक काल से होती हुई ग़ज़ल आज जिस धरातल पर खड़ी है उसमें रोमानियत और रूहानियत का जुड़ाव नहीं, अपनी जमीन की असली पहचान है। वह आम आदमी की विवशता और विदूप परिस्थितियों से सीधा साक्षात्कार कराती है। 'तपी हुई जमीन' वस्तुतः राजकुमार निजात के ऐसे ही यथार्थपरक ग़ज़लों का संग्रह है। यह उस धरती की निजता से सरोकार रखता है जहाँ की मिट्टी में आग है, ज्वाला है, अन्दर से उठने वाली भभक है।

निजात जी ने अपनी ग़ज़लों में भोली–भाली जनता के सही रूप जो कि यथार्थ है जैसे गरीबों पर जुल्म, भूखमरी, अन्याय, अत्याचार आदि को अपनी आँखों से देखकर उस पीड़ा को अपनी अर्न्तात्मा से या अन्तर्बुद्धि से उसका सही–सही शब्दों में व्यक्त किया। इन्होंने केवल एक मानव जाति का ही वर्णन नहीं किया, अपितु सभी जीव–जन्तु, प्रकृति तथा पेड़–पौधों के भी उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। एक उदाहरण देखिये –

सहमा सहमा जीवन है हर आंगन का
काँप रही है चिड़िया बैठी पीपल पर
जाने किसको खोज रही है भीड़ यहाँ
पगलाई सी हाथों में पत्थर भर कर।[5]
हर पत्ता सहमा–सहमा लगता हो
कैसे फिर बंजारिन गीत सुनाएगी
लोग नहीं सो पाते हों जिस बस्ती में
सुबह किसे फिर आकर वहाँ जगाएगी।[6]

उपर्युक्त अंशो में शायर ने यह दर्शाने की कोशिश की है कि समाज में अत्याचार, अन्याय इतना अधिक हो गया है कि व्यक्ति तो क्या जीव–जन्तु तथा वनस्पति भी सहज अनुभव नहीं करते हैं। चारों तरफ भय का आतंक पसरा हुआ है। यही आज के समाज का सत्य है। समाज साम्प्रदायिक्ता का चपेट में आ चुका है। निजात की ग़ज़लें साम्प्रदायिक परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति–व्यक्ति के बीच असम्बन्धों और उसके बीच से उत्पन्न कुछ बुनियादी सवालों को उठाती हैं जो चेतना को झंकझोरकर रख देती है। साथ ही दिशा देती है –

आदमी को न और बांटो तुम
मुद्दतों तक न जोड़ पाओगे।[7]

इसमें सामाजिक षडयन्त्रों और उसके मसीहों के नकली मुखौटे को जिस तरह नंगा किया गया है वस्तुतः अपने आप में उत्कृष्ट चित्रण है। ऐसे ही कुछ अन्य अंश भी दृष्टव्य हैं :

जब कभी टुकड़े हुए हैं मुल्क के लोगों सुनो
ढ़ेर से दुखड़े हुए हैं मुल्क के लोगों सुनो
बांटते हैं तोड़ते हैं आदमी को जो यहाँ
खास कुछ मुखड़े हुए हैं मुल्क के लोगों सुनो।[8]

जिस तरह भाषा, जाति वर्ग, सम्प्रदाय, धर्म तथा क्षेत्रीयता के नाम पर आदमी को बांटने की शतरंजी चाले चली जा रही है। निजात जी ने इनका बड़ा ही यथार्थपरक चित्रण किया है –

हो गया कितना पराया इस शहर का आदमी
हो के अपना हो न पाया इस शहर का आदमी
हो गए खुदगर्ज सारे लोग अपनी फिक्र में
अपनो को ही लूट आया इस शहर का आदमी
जाने किसने डाल दी है एक आपस में दरार
मुद्दतों से मिल न पाया इस शहर का आदमी [9]
बांट दी मन्दिर में मस्जिद में 'निजात'
हो गई है सिख इसाई ग़ज़ल

सजग रचनाकार को उसके परिवेश में आस–पास की घटनाएं उद्वेलित करती हैं। वे चाहे मानव जाति की क्रूर मानसिकता हो अथवा समय का ताण्डव, वह तुरन्त प्रतिक्रिया देकर अपनी रचनाधर्मिता की निर्वाह करता है। निजात ने संसार के भीतर फैली अनेक विसंगतियों का चित्रण आक्रोशमय भावों के साथ किया है–

उस आंगन में धूप कहाँ से आएगी
खिड़की जब खुद सूरज को खा जाएगी
घर में ही गर कैद हो गए घर के लोग
आजादी कैसे दस्तक दे पाएगी
लोग नहीं सो पाते हो जिस बस्ती में
सुबह किसे फिर आकर वहाँ जगाएगी।[10]
बेचते हैं अशर्फी के लिए सच्चाईयाँ
किस तरह मख्सूस उनके हाथ से दस्तूर है [11]
इस शहर का अजीब नाता है,
आदमी–आदमी को खाता है[12]
गली–गली और बस्ती–बस्ती सूनापन है राम कसम
नहीं पुराना बैर मगर फिर भी अनबन है राम कसम।
भेष बदलकर बैठे हैं सब मन्दिर और शिवालों में बस
सबका रोटी की खातिर एक चलन है राम कसम।[13]
रिश्वत, घूस, दलाली लेकर भी बने मसीहा हैं
नहीं किसी के चेहरे पर भी एक शिकन है रामकसम।[14]

सामाजिक जीवन मात्र विडम्बनामय होकर रह गया है। जिस समाज में खुशियों तथा उल्लासों का बोलबाला होता था आज वह मात्र यादें बनकर ही रह गई है। शायर की पीड़ा देखिए –

एक जंगल सी हो गई बस्ती
अपने ही घर में खो गई बस्ती[15]

विडम्बना की अति तो देखिए जो साहित्यकार सबको वर्तमान से सीख लेकर भविष्य को सुरक्षित करने की नसीहत देता है वह स्वयं भी आज सुरक्षित नहीं है। वह इतना लाचार हो गया है कि वह शांति के गीत भी नहीं गुनगुना सकता। ये सब देखकर निजात जी का कोमल हृदय जैसे चिल्ला–चिल्लाकर चितकार करने लगता है –कराह उठता है –

खून बहता है खुदा के आस्तां पर रोज रोज
मैं खुदा को अपना किस्सा अब सुनाऊँ किस तरह
आदमी से दिल्लगी की बात अब इक ख्वाब है
इश्क! तुझको मैं हमेशा भूल जाऊँ किस तरह
कत्लगाना साजिशों पे साजिशें जब हो रही
दोस्तों फिर मैं अमन के गीत गाऊँ किस तरह।[16]

यदि कोई साहित्यकार साहस जुटाकर सच्चाई उजागर करना चाहता है तो उसे रोक दिया जाता है। यदि फिर भी वह ऐसा करने का दुःसाहस करता है तो उसको कालकोठरी में भेज दिया जाता है। साहित्यकारों की लाचारी की पीड़ा निजात जी की ग़ज़लों में स्पष्ट दिखती है –

जिसने कागज़ पर उछाली सत्यता थी
हाथ में उसके बिरादर हथकड़ी है।

वस्तुतः राजकुमार निजात की ग़ज़ले साफगोई से आदमी के दिल और दिमाग में कील की तरह गड़ती हैं। उसकी सुसुप्त चेतना को झंकृत कर यथार्थबोध का अहसास दिलाती है। परन्तु जब किसी के हाथ में इक आग का शोला थमा हो तो हम कैसे विश्वास कर सकते हैं 'किसी का दर्द तुम जान पाओगे।' और फिर कब तक सच्चाइयों से चुप रहोगे क्योंकि रचनाकार भी समाज का एक अंग है, उसका भोक्ता है। तभी तो वह कहता है –

क्या सुनाए अपनी ग़ज़ल
लोग बन्दूक गुनगुनाते हैं।

निष्कर्ष

परिवर्तन सृष्टि का नियम है। परिवर्तन ही जीवन है। मनुष्य ने सृष्टि के इस नियम को आत्मसात कर लिया और वह निरन्तर आगे बढ़ता गया। इसी ने उसमें लोभ–लालच, ऐशो–आराम की भावना कूट–कूटकर भर दी। वह इसी के चलते निरन्तर बदलता गया। इसी कड़ी में उसने अपने रहने के तरीके को भी बदल दिया। उसके जीवन में ग्रामीण सभ्यता की जगह महानगरों–नगरों ने ले ली। ग्रामीण जीवन जहाँ सीधा–सादा, भावनात्मकता से परिपूर्ण होता है। इसके विपरित नगरीय जीवन उतना ही एकाकी, स्वार्थी तथा संवेदनाशून्य का पर्याय है। शहरीकरण ने हमारी संस्कृति तथा सभ्यता पर कुठाराघात किया है। इसी शहरीकरण के चक्रव्यूह में मनुष्य फंस चुका है। अब वह इस चक्रव्यूह को तोड़ नहीं पा रहा है। सदियों से चले आ रहे विचार बदल चुके हैं। मनुष्य के सोचने–विचारने का ढंग परिवर्तित हो चुका है। दया, धर्म, सहानुभूति, ममता, परोपकार की भावना आदि इन्सानियत के गुणों को वर्तमान समाज तिलांजलि दे चुका है। इन्सानियत को निजि स्वार्थ ने धीरे–धीरे समाप्त कर दिया है। इस परम्परा को समाप्त करने में बड़े–बड़े शहरों का भी उतना ही हाथ है जितना स्वार्थ का।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *निजात राजकुमार–'तपी हुई जमीन', अयन प्रकाशन 1/20, महरौली, नई दिल्ली 110030*
2. *सिंह अरूण कुमार–'उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान', मोतीलाल बनारसीदा, जवाहर नगर, दिल्ली–110 007*
3. *सिंह अरूण कुमार– 'आधुनिकअसामान्य मनोविज्ञान' मोतीलाल बनारसीदा, जवाहर नगर, दिल्ली–110 007*

पाद टिप्पणी

1. *डॉ0 सत्येन्द्र प्रकाश नंदा, आस, आग और आँसू, पृ0 1*
2. *डॉ0 राजकुमार निजात, तपी हुई जमीन, पृ0 71*
3. *डॉ0 राजकुमार निजात, तपी हुई जमीन, पृ0 पृ0 30*
4. *डॉ0 राजकुमार निजात, तपी हुई जमीन, पृ0 पृ0 27*
5. *डॉ0 राजकुमार निजात, तपी हुई जमीन, पृ0 74*
6. *डॉ0 राजकुमार निजात, तपी हुई जमीन, पृ0 20*
7. *डॉ0 राजकुमार निजात, तपी हुई जमीन, पृ0 पृ0 18*
8. *डॉ0 राजकुमार निजात, तपी हुई जमीन, पृ0 40*
9. *डॉ0 राजकुमार निजात, तपी हुई जमीन, पृ0 30*
10. *डॉ0 राजकुमार निजात, तपी हुई जमीन, पृ0 पृ0 20*
11. *डॉ0 राजकुमार निजात, तपी हुई जमीन, पृ0 21*
12. *डॉ0 राजकुमार निजात, तपी हुई जमीन, पृ0 पृ0 22*
13. *डॉ0 राजकुमार निजात, तपी हुई जमीन, पृ0 27*
14. *डॉ0 राजकुमार निजात, तपी हुई जमीन, पृ0 पृ0 27*
15. *डॉ0 राजकुमार निजात, तपी हुई जमीन, पृ0 पृ0 47*
16. *डॉ0 राजकुमार निजात, तपी हुई जमीन, पृ0 31*